कुण्डलपुर विधान

रचयिता
सारस्वत कवि
आचार्य विभवसागर

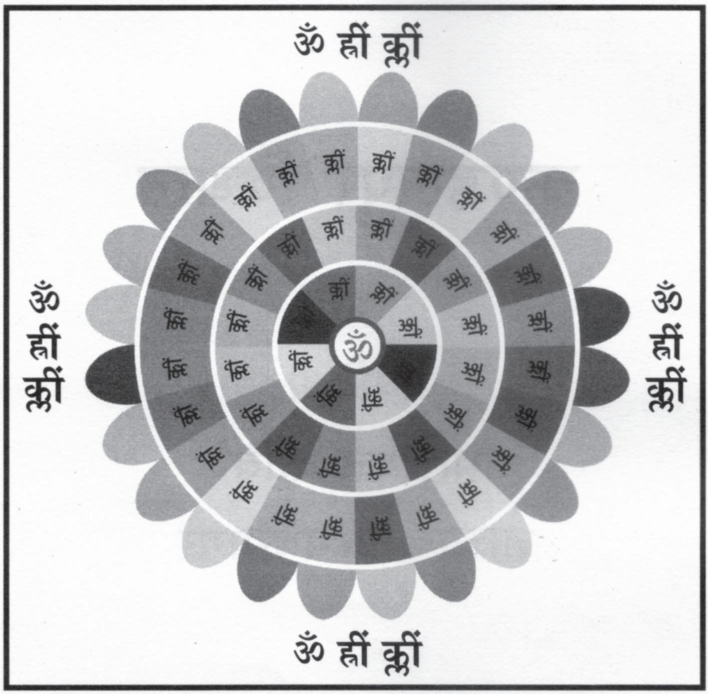
ॐ ह्रीं क्लीं
ॐ ह्रीं क्लीं
ॐ
ॐ ह्रीं क्लीं
ॐ ह्रीं क्लीं

प्रस्तावना

कुण्डलपुर विधान

लेखन मन का प्रकाशन केन्द्र है। जिसमें अन्तर्मन और अन्तर्रात्मा की अनुभूतियों का पंजीकरण होता है। स्वावलम्बी होकर अखिल विश्व के प्राणियों को अवलम्बन देने की सामर्थ कला का नाम लेखन है। किसी विद्वान ने लिखा या तो ऐसा जियो कि लोग आप पर लिखें, या ऐसा लिखो कि लोग आपके लिखे पर जियें।

महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी कहते हैं–हित से जो युक्त समन्वित होता है वह सहित माना और सहित का भाव साहित्य बना है। अर्थ यह हुआ कि जिसके अवलोकन से सुख का समुद्भव–संपादन हो सही साहित्य वही है। 250 ग्रन्थों की लेखिका गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माता जी कहती हैं– **'जिनवाणी का एक अक्षर भी लिख लेना साक्षात् सरस्वती की कृपा है। जो गुरु प्रसाद एवं श्रुतभक्ति का फल है!'**

चिंतन पथगामी महापुरुष जब अपनी चिंतन धारा का अमृत इस प्यासे विश्व को पिलाने का मनोभाव संजोता है: तब काव्य रचना जन्म लेती है। प्राक् आचार्य श्री जिनसेन स्वामी अपने महाकाव्य महापुराण में लिखते हैं।

धर्मानुबंधनी यः स्यात् कविता सा प्रशस्यते ।

जो धर्म से सम्बन्ध रखे, वही कविता प्रशस्त मानी जाती है। उक्ताशय को गुरुमंत्र मानकर इस कुण्डलपुर विधान का सृजन हुआ जिसका उद्देश्य–

तय विलय होने से पहले लय में लीन हो जाऊँ।
आदिनाथजी का पूजन विधान कर, आदि अंत से हीन हो जाऊँ॥

इस निष्काम भावना से जिन में, जिनालय में, तथा निज में निजालय में लवलीन हो जाता हूँ, मेरी हर लय में मेरे इष्ट देव! समाहित हो जाते हैं। प्रकृति का कण-कण मेरी लयबद्धता में बद्ध होने चला आता है। पर में प्रकृतिबद्ध नहीं होता। मेरी प्रकृति कुछ ऐसी है कि में कर्म प्रकृति से भयभीत रहता हूँ। धर्म प्रकृति होने का यही सुफल है। यही करण मेरी कृति में प्रकृति का चित्रण हे। कभी तो लगता है-मेरी कृति ही मेरी प्रकृति हे, तो कभी लगता है मेरी प्रकृति ही मेरी कृति है।

प्रकृतिय कृति ही संसकृति की जन्मदत्री है। कृति में सर्वज्ञ की स्वीकृति आवश्यक मानता हूं। अत: सर्वज्ञ शासन की आराधना करता हुआ आप्त आगम गुरु की सन्निधि पाकर मौन मुखरित हो उइता है। प्रार्थना के स्वर गुंजायमान होने लगते हैं। मेरा चित्त पवित्रता ओर प्रसन्नता से भर उठता हे, तब मैं समझता हूँ मेरी कृति को प्रभु की स्वीकृति मिल गयी। और कलम मचल उठती हे फलत: कमनीय काव्य कालिन्दी प्रवाहित हो उठती है। जो गंगा सी शीतल यमुना सी पावन, सरस्वती सी बुद्धिप्रद होती है। भाव पक्ष में विशुद्धि तत्व प्रधान होता है। गीत में गति और आत्मा में सन्मति का जन्म होता है। जो परमगति प्रदायनी होती हे।

नदी में लय, निर्झर में लय, जल में लयं, पवन में लय, प्रकृति के कण-कण में लय है, पैरों में लय होगी गति प्रशसत होती है। हाथों में लय हो तो मधुर करतल ध्वनि संगीत झंकृत हो उठता है। लय ही जीवन है। लय का विलय होना ही मरण है।

शब्दों में लय ही गीत बन जाता है,
भावों में लय ही प्रीति बन जाता है।
व्यवहार में लय ही नीति बन जाता है,
आचरण में लय ही रीति बन जाता है।

नदी अपनी लय में कल-कल करती बह रहीं। वयारें अपनी लय में वह रही। झर-झर निर्झर की झर-झर में अपनी लय हे, मिट्‌टी के हर कण-कण में लय है तो जीवन के हर झण-झण में लय है। लय में लालित्य है। लय में साहित्य है। लय में भक्ति है। लय में शक्ति है। लय में अनुशक्ति है। लय में लवलीन होना ही भक्ति है।

मेरी प्रत्येक लय में जिनालय हो जिलालय में हो तथा जिनालयमय हो। अंतिम लय भी जिनालय में निर्ग्रन्थों की छाँव तले विलय हो। ताकि मरण समाधि पूर्वक हो। जिनालय में विलीन हुई अंतिम लय मुझे सिद्धालय में लीन कर दे। ऐसी परम पवित्र भावना संजोकर में लय में लवलीन हूँ प्रलय से हीन हूं। स्वाधीन हूँ।

अन्न में मधुरता मिलते ही मिष्ठान बन जाता है। अन्न में दुग्ध शक्करा मिल जाये क्षीरान्न बन जाता हे। उसी तरह वाणी में जिन मिल जायें तो वाणी जिनवाणी बन जाती हे। अब वाणी को वीणा नहीं, जिनवाणी बनाना है यही श्रुताराधना का फल हे।

स्वयं को रचे बिन, रचना कब रचती हे। रचयिता तो वही है जो पहले स्वयं में रचे, स्वयं को रचे, स्वयं से रचे, स्वयं के द्वारा रचे। स्वयं के लिये रचे।

घर में रचना, पर को रचना, क्या रचना है। नही यह रचयिता की त्रुटि हैं अहो आत्मन्।

अब तक में रचा रहा। अब तो निज को रच ले।
अब तक पर में बसा रहा। अब तो जिन में बस ले॥

पर रचना हो पर सिद्ध पद के लिये। साधु पद के लिये। परमेष्ठी पद के लिये। पद-पद पर आने वाली विपदा पलायन कर जायेगी। भक्तामर की पद रचना अर्हन्तपद के लिये की गई। विपद पलायन कर गई। आपद संपद बन गई कारागृह पूजनगृह बन गया। नमस्कार चमत्कार बन गया। बन्दी स्थल भी तीर्थस्थल बन गया।

जो पद रचना कर्म श्रृंखलाओं से मुक्त करा सकती है वह रचना यदि लोह श्रृंखला से भी मुक्त करेगी। एसी ही भाव भीनी रचना धर्मिता से प्रेरणा पाकर काव्य रचना प्रारम्भ होती है तो वह रचना मानव जगत की संरचना के काम एवं जपोपूत श्रावकों के मन्त पुन्ज कर कमलों में सविनय सादर है यह कृति कुण्डलपुर विधान....।

चैत्र कृ. नवमी आदिनाथ जयंति के शुभदिन कुण्डलपुर से रचना प्रारंभ हो कार्तिक क. अमावस्या दीपावली के शुभ दिन दो सौ सोलह दिवस में रचना पूर्ण हुई।

कृति के संपादक डा. श्री भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु' पूरोवाक् लेखक वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेश जी 'सरल' टंकण संशोधक डा. श्री एल.सी. जैन तथा उत्साह प्रदाता प्रो. एल. सी. जैन (गणितज्ञ) के सम्मति प्रेषक मध्यांचल तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सतीश जी सिंघई 'कटनी' एवं श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलगिरि, कुण्डलपुर कमेटी के अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई जी सभी के प्रति आभार पूर्वक शुभाशीष।

श्री सम्यग्ज्ञान शिक्षण समिति के उत्साही युवा, समर्पित गुरु भक्त श्रुताराधक विकास जैन (जोनी), मुद्रक मनोहरलाल जैन, दीप प्रिंटर्स–नई दिल्ली, प्रभात जैन, सोलार ऑफसेट जबलपुर को आशीर्वाद। प्रत्यक्ष परोक्ष में जिन महानुभावों का सहयोग मिला उनके प्रति शुभकामना। प्रकाशक परिवार के लिये शुभाशीर्वाद।

अंतोगत्वा जिनके शुभाशीर्वाद से इस कृति का प्रणयन संभव हो सका, वह मेरे दीक्षा शिक्षादाता प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज आपके श्री चरणों भक्तिमय पूर्वक कोटि–कोटि नमोस्तु पूर्वक आत्मा के असंख्यात प्रदेशों पर विराजमान पूज्य बड़े बाबा की भक्ति में समर्पित – 'कुण्डलपुर विद्यान'

विज्ञ पाठक आवश्यक दिशा निर्देश प्रकाशक को प्रदान करें।

कुण्डलपुर पूजा

(आह्वानन)

जय कुण्डलपुर ! जय आदिनाथ ! जय पूज्य बड़े बाबा प्रभुवर !
जय सिद्ध क्षेत्र ! जय तीर्थक्षेत्र ! जय जय श्रीधर ! जय जय भूधर ॥
आ जाओ पूज्य बड़े बाबा, मैं बुला रहा सादर सिर धर।
इस सिद्ध क्षेत्र से सिद्धालय, ले चलो आप मुझको श्रीधर !

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र! श्री पूज्य बड़े बाबा आदिनाथ स्वामिन्! श्री केवली श्रीधर स्वामिन्! अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जल)

अतिशय पावन अतिशय उज्जवल, शुभ शान्त स्वभाव तुम्हारा है।
तेरे स्वरूप में निज स्वरूप, हे भगवन्! आज निहारा है॥
चैतन्य गुणों का संस्पर्शी, चाहूँ स्वरूप का अवलोकन।
मैं तीर्थ अर्चना करता हूँ, बन जाये तीर्थमयी जीवन॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(चन्दन)

चंदन, चंदा, गंगा, शीतल, इनसे शीतल तेरी वाणी।
तेरी अध्यात्म देशना ही, जिन! बनी जगत की कल्याणी॥
भव पाप-ताप संताप हरे, सर्वास्रव का संवर करती।
यह बनी निर्जरा निर्झरणी, भव्यों को मोक्ष महल धरती॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

(अक्षत)

अक्षय निधि की विधि बतलाओ, अक्षय अनंत गुण प्रकटाओ।
अक्षय अविनाशी धाम बता, अक्षयपुर का पथ दर्शाओ॥
अक्षय तृतीया की बेला सा, मुझमें आनंद समाया है।
मानो श्रेयस राजेश्वर ने, आदीश्वर को पड़गाहा है॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्प)

पद पंकज में, पंकज अर्पित, अर्पित हैं यह सुमनावलियाँ।
मैं जिन अर्चा में रचा पचा, गाता हूँ जिन! भजनावलियाँ॥
मेरे शब्दों के सुमनों में, भावों की गन्ध समायी है।
चैतन्य वाटिका से उड़कर, तेरे द्वारे पर आयी है॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(नैवेद्य)

अक्षरमाला के यह व्यंजन, मनभावों के नैवेद्य बने।
निज ध्यान अनल पर पक्व हुए, श्रद्धा घृतरस में सने-सने॥
तेरे चरणों की पूजन से, संतृप्त स्वयं हो जाता हूँ।
अतएव अर्चना भावों से, चरणों नैवेद्य चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दीप)

तेरे शुद्धात्म प्रदेशों में, कैवल्य रश्मियाँ उदित हुई।
जिनको पाकर भुवनत्रय की, चेतन परिणतियाँ मुदित हुईं॥
जिनवर समीप यह भक्त दीप, ज्योतिर्मय होने आया है।
क्योंकि अज्ञान अंधेरे में, सत्पथ भूला भरमाया है॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(धूप)

तुम अरस अरूप अगंधमयी, तुम वर्ण शब्द से परे हुये।
तुम अष्ट कर्म से मुक्त हुये, पर गुण सुगंध से भरे हुये॥
चिन्मय चरित्र का चमत्कार, हे नाथ! आपने प्रकटाया।
तुम सम अनंत गुण पाने को, मैं नमस्कार करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(फल)

सुर नारक पशु पर्यायों में, जो-जो फल पाया छोड़ा है।
वह नहीं चाहिए नाथ मुझे, उन सबसे नाता तोड़ा है।
जो मात्र मनुष्य भव में फलता, वह सम्यक् व्रत, तप, ध्यान मिले।
हो सफल भावना यह मेरी, सन्यास मरण निर्वाण मिले॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घ्यं)

हे पूज्य बड़े बाबा मेरे! तुम सम्यग्दर्शन दाता हो।
तेरे दर्शन कर यह लगता, ज्यों जन्म जन्म से नाता हो॥
मेरी श्रद्धा यह कहती है, कुण्डलपुर में भगवान मिले।
बिन माँगे ही भगवान मुझे, निर्वांछित सब वरदान मिले॥
श्रीधर स्वामी के चरणों में, सादर शिर धर कर वन्दन हो।
जो सन्त यहाँ अब तक विचरे, उन सन्तों का अभिनंदन हो॥
उन निर्ग्रन्थों की छाँव तले, जिन! मुझे समाधिमरण मिले।
बस एक चाह बाबा मेरी, अंतिम श्वासों तक शरण मिले॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यं पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माड़ना कुण्डलपुर विधान

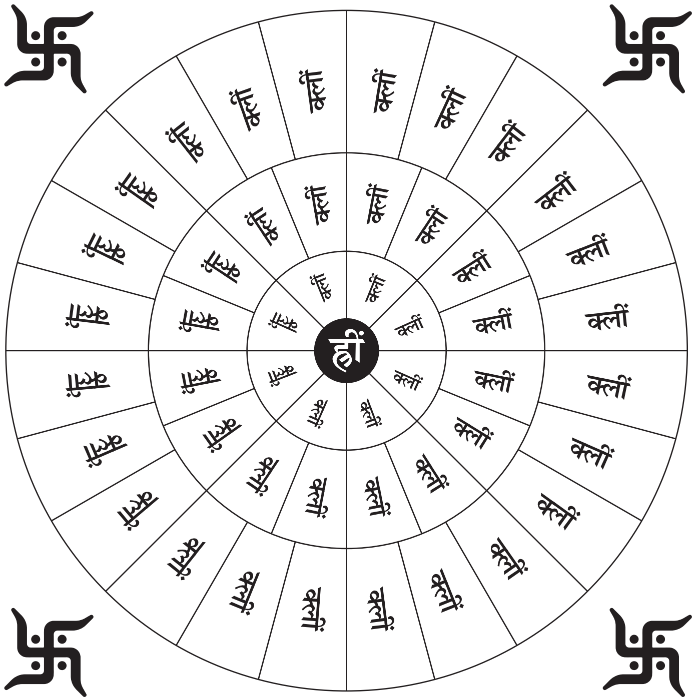

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः

विधान प्रारम्भ

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

पूज्य बड़े बाबा भगवन्!
भक्ति भाव से नमन-नमन।
नाभिराय नंदन-वंदन,
मरुदेवी सुत अभिनंदन॥

हे प्रथमेश्वर! जय-जय-जय,
आदि जिनेश्वर! जय-जय-जय।
कुण्डलेश हे जय-जय-जय।
कुण्डलपुर हे जय जय जय॥

आ जाओ प्रभु! आ जाओ,
हृदय हमारे आ जाओ!
भक्त बुलाता हे भगवन्!
आन विराजो हृदय सदन॥

यह मेरा आह्वानन है।
सादर नम्र निवेदन है।
स्वीकारो मेरे भगवन!।
हे कुण्डलपुर! हे भगवन्!

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

[प्रथम वलय अर्घ्यावली]

कुण्डलपुर महिमा

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

कुण्डलपुर का यह आँगन,
इसको चूमें धरा गगन।
हृदय बसी हरयाली है,
हर दिन यहाँ दिवाली है॥

आत्म शांति का पहरा है,
हर पल यहाँ दशहरा है।
भावों की केशर घोली,
मना रहे हम सब होली॥

कण-कण इसका पावन है,
रक्षाबन्धन सावन है।
लक्षण यहाँ विलक्षण सा,
पर्वराज दशलक्षण सा॥

अचल कुण्डलाकार अहा,
कुण्डलगिरि साकार रहा।
कुण्डलपुर शुभ नाम अरे।
श्रीधर का शिवधाम अरे॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥1॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ज्वरादि रोग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लघुता

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

मेरी प्रज्ञा ही कितनी,
सागर में बिन्दु जितनी।
तुम अनंत प्रज्ञासागर,
हो अनंत गुण के आगर॥

आप जानते नाथ मुझे,
नहीं जानता नाथ तुझे।
आप जानकर मौन गहे,
हम अंजाने मुखर रहे॥

कहो नाथ तुमसा होलूँ,
नहीं नाथ तुमसे बोलूँ।
तो कैसा यह भक्त अरे,
जो गुण गायन नहीं करे॥

ना बोलूँ तो मूक रहा,
अतः पिऊ सम कूक रहा।
अन्तर की आवाज सुनो,
क्या बोला वह आप गुनो॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥2॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं शिरोरोग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विधान तीर्थ समान

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

बोलो भगवन्! क्या गाऊँ,
शब्द नहीं जो कह पाऊँ।
वचन वर्गणायें पुद्गल,
इनमें क्या है अनुभव बल॥

अनुभव कर्त्ता का अनुभव,
जगा रहा है आत्म विभव।
आत्म ज्ञान चिंतन द्वारा,
बहा भक्तियों की धारा॥

मेरी यह वचनावलियाँ,
पुद्गलमय शब्दावलियाँ।
चेतन गुण क्या गायेगी?
भाव भक्ति प्रकटायेगी॥

यह विधान रचता प्यारा,
कुण्डलपुर जैसा न्यारा।
यह अपूर्व अश्रुत अनुपम,
करना भविजन हृदयंगम॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥3॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं नासिका रोग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलपुर महोत्सव

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

इन्द्र-वृन्द देवेन्द्र सभी,
नर नरेन्द्र नागेन्द्र सभी।
क्षीर-नीर के कलश लिये
भक्ति भाव धर सरस हिये॥

गिरि सुमेरू सा दृश्य यहाँ,
होता जब अभिषेक यहाँ।
हर पल मंगल उत्सव सा,
कल्याणक जन्मोत्सव सा॥

अभिसिंचित जल प्रतिमा पर,
पूज्य बड़े बाबा ऊपर।
मोती सम लगते जलकण
दृश्य यहाँ दुर्लभ क्षण-क्षण॥

गन्धोदक जब हाथ मिला,
मन प्रसून सा खिला-खिला।
पाप पंक प्रक्षाल हुआ,
मैं तो आज निहाल हुआ॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥4॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि अक्षि रोग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक वंदन

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ।

द्रव्य-भाव कर्मों का मल,
धो देता गंधोदक जल।
पाप विनाशक पावन है,
धर्मामृत का सावन है॥

तन चेतन निर्मल करता,
मन में शीतलता भरता।
सब कर्मों का घात करे,
मंगल धर्म प्रभात करे॥

पावन गंधोदक पाकर,
भागे पाप पलायन कर।
यह अनंत गुण गंधक है,
अनुपमेय गंधोदक है॥

जिन ऊर्जा में घुला-मिला,
गंधोदक यह मुझे मिला।
माथ लगा वन्दन करता,
वन्दनीय बन्धन हरता॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥5॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह णमो अणंतोहि जिणाणं कर्ण रोग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम दर्शन

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

गुण सुमनों की यह क्यारी,
भक्ति मंजरी फुलवारी।
रंग-बिरंगे फूल यहाँ,
गुण सुगंध अनुकूल यहाँ॥

भक्त अंजली जोड़ रहा,
पुष्पांजलियाँ छोड़ रहा।
करता सुमन समर्पित हूँ।
सौ-सौ जीवन अर्पित हूँ॥

करूँ न्यौछावर आत्मकला,
तुमको पा मन सुमन खिला।
तन-मन बहुत प्रसन्न हुआ,
भक्त मुक्ति आसन्न हुआ॥

अनुपम दर्शन यहाँ मिला,
सम्यग्दर्शन मुझे मिला।
जो आ पहुँचा जिन देरी,
उसे मोक्ष में क्या देरी?

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥6॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं ममात्मनि विवेक ज्ञान प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रहस्य

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

प्यारा सरवर यहाँ अरे,
जो प्रतिपल जिन दर्श करे।
जिन मंदिर, जिन प्रतिमा का,
कुण्डलपुर की महिमा का।

अहा! सरोवर अंदर क्या?
जल मंदिर, जल अंदर क्या?
कहने को जल मंदिर है,
यह तो शान्ति समुन्दर है॥

वर्द्धमान सागर बोला,
शुभ रहस्य उसने खोला।
चित्त सलिल सा उज्जवल हो,
शीतल शान्त समुज्ज्वल हो॥

जैसे शान्त सरोवर में,
झलक रहे, मंदिर इसमें।
वैसे ही मानव मन में,
प्रभु झलकें अन्तर्मन में॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥7॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्ह णमो बीज बुद्धीणं हृदय रोग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रेरणा

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

अद्‌भुत यहाँ नजारा है,
लगता प्यारा-प्यारा है।
पंछी जल पीने आते,
मानों गुण जल पी जाते॥

चिड़ियाँ चह-चह चहक रहीं,
कोयल कुह-कुह कुहुक रही।
सारस दल उड़कर आते,
भक्त सरस स्वरस पाते॥

देखो तो इसके तट को,
मंगलमय मंगलघट को।
दृश्य मनोहर अन्दर का,
लगता क्षीर समुन्दर सा॥

आत्म गुणों का निर्मल जल,
भरना प्यारे! सरस धवल।
आत्म ज्ञान में लहराना,
निर्मलता निज में पाना॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥8॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादानुसारीणं परस्पर विरोध विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[द्वितीय वलय प्रारम्भ]

भेद विज्ञान कला

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ।

मेघों ने जलवर्षा कर,
धवल शिखर को नहलाकर।
गन्धोदक सा थाल भरा,
करुणा जल परिपूर्ण भरा॥

राजहंस उड़कर आते,
साधु संत सम वह भाते।
भेदज्ञान सिखलाते से,
उड़कर शिवपुर जाते से॥

शीतकाल में पवन चले,
तब लहराये नीर भले।
झिलमिल-झिलमिल बोल रहा,
रहना हिल-मिल बोल रहा॥

धर्म अहिंसा, धारो तुम,
दया भाव स्वीकारो तुम।
आज धर्म जो पा लेगा,
धर्म उसे भी पालेगा॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥9॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं श्वास रोग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग विद्यालय

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

कुण्डलपुर के जिन आलय,
वीतराग के विद्यालय।
जिनदर्शन करने आओ,
वीतराग विद्या पाओ॥

जिनमंदिर जो आयेगा,
मन मंदिर में ध्यायेगा।
प्रभु उसके मन मंदिर में,
आन विराजे अन्दर में॥

बड़े प्रेम से आते हैं,
क्षेम कुशलता लाते हैं।
ज्यों जल में अवगाहन से,
शीतल होवें तन मन से॥

भरा विशुद्धि का यह जल,
मन्दिर जी का अन्तस्थल,
आत्म शुद्धि से ओत-प्रोत।
बहा रहा शुद्धि का स्रोत॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता

पूजा मंत्र - **ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धीणं कवित्वं पाण्डित्यं पद प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।**

शान्ति तीर्थ

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

यहाँ शान्ति क्यों मिलती है?
मन बगियाँ क्यों खिलती हैं?
विश्व शान्ति के मन्त्र यहाँ,
जपे अहर्निश सन्त यहाँ॥

सहज शान्त मुद्रा लखकर,
शान्त भाव मन में रखकर।
विश्व शान्ति जिन यज्ञ महा,
करें निरन्तर विज्ञ यहाँ॥

सूरि संघ भी मुखर हुआ,
मंत्रोच्चारण प्रखर हुआ।
गणधर मंत्रों के द्वारा,
जिन प्रतिमा पर जल धारा॥

दिव्य ध्वनि सा सुखद श्रवण,
शान्ति मंत्र अमृत वर्षण।
आत्म शान्ति विस्तार करे,
विश्व शान्ति संचार करे॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥11॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह णमो पत्तेय बुद्धीणं प्रतिवादि विद्या विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ हमारे प्राण

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

तीर्थ हमारे प्राण कहे,
जैनधर्म पहिचान रहे।
तब से अब तक धरती,
पर, रहे, रहेंगे, हैं भूपर॥

पूरब में सम्मेद शिखर,
जहाँ विशुद्धि मिले प्रखर।
तीर्थंकर निर्वाण धरा,
जहाँ विश्व कल्याण भरा॥

पश्चिम में गिरनार अचल,
नेमिनाथ का यह शिवथल।
जैन तीर्थ भव तारक है,
विश्व शान्ति विस्तारक है।

दक्षिण में श्री बाहुबली,
जैन जगत को निधि मिली।
उत्तर भारत की भूपर।
सबका प्यारा कुण्डलपुर॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥12॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं अन्यग्रहीतं श्रुतज्ञान प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नयनाभिराम कुण्डलपुर

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

सुन्दर सलिल सरोवर है,
मानो ये पावापुर है।
वर्द्धमान सागर सरवर,
वर्द्धमान सा यह हितकर॥

सुन्दर-सुन्दर सुमन खिले,
तट पर सुन्दर श्रमण मिले।
इसमें अगणित मीन यहाँ,
हरपल दृश्य नवीन यहाँ॥

मीन सदा जल पान करें,
भक्त मीन गुण पान करें।
रहे मत्स्य ज्यों सरवर में,
रहे वत्स कुण्डलपुर में॥

कुण्डलपुर के जिन मंदिर,
उच्च शिखर सरवर अंदर।
झिलमिल, झिलमिल झलक रहे,
दर्शन को हम ललक रहे॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥13॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शांति प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव सप्रेषक

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

अहो बड़े बाबा प्यारे,
कहो बड़े बाबा प्यारे।
आप अबोले क्यों रहते?
भोले-भाले क्यों रहते ?॥

भावों के संप्रेषक हो,
भव्यजीव संपोषक हो।
आओ मेरे मन मंदिर,
शुद्ध भाव भर दो अन्दर॥

महागुणों के कोषालय,
सर्व दोष हो चुके विलय।
यह निसर्ग सौन्दर्य कहाँ?
तुम सा अद्भुत धैर्य कहाँ?

खोलो मोक्ष महल द्वारे,
पूज्य बड़े बाबा प्यारे।
तुम्हें नमन शत-शत मेरा,
अवनत विनत सतत चेरा॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥14॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं बहुश्रुतज्ञान प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अविस्मरणीय

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

सुनो यहाँ एक मंदिर था,
अतिशयकारी सुंदर था।
जहाँ बड़े बाबा रहते,
पार्श्व खड़े बाबा रहते॥

कहने को छोटा सा था,
छिद्र रहित नौका सा था।
मंदिर बहुत पुराना था,
लगता सदा सुहाना था॥

उस मंदिर का क्या कहना,
कुण्डलपुर का था गहना।
शीतल शान्त मनोहर था,
वह प्राचीन धरोहर था॥

उसका यहाँ ठिकाना है,
यादें अमिट बनाना है।
पहले इसको नमन करो,
वन्दनार्थ फिर गमन करो॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥15॥

पूजा मंत्र - ऊँ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व वेदिन पद प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलपुर अतिशय

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

इस प्रतिमा का क्या अतिशय?
बोल रहा जग क्यों जय-जय?
जब औरंगजेब आया,
संग साथ सेना लाया॥

प्रतिमा भंजन करने को,
जैनधर्म के हरने को।
पहली छैनी जहाँ पड़ी,
दुग्ध धार तब फूट पड़ी॥

मधुमक्खियाँ टूट पड़ीं,
उपसर्गी पर रूठ पड़ीं।
सेना उल्टे पैर भगी,
मधु मक्खियाँ साथ लगीं॥

राजा बोला क्षमा करो,
प्राण दान दो, दया करो।
कुण्डलपुर का यह अतिशय,
सुनकर बोलो जय-जय-जय॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥16॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं स्वसमय परसमय वेदिन पद प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कामना पूरक कुण्डलपुर

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

छत्रसाल था भक्त जहाँ,
सुखद शान्त साम्राज्य वहाँ।
जब उस पर संकट छाया,
बाबा तेरे दर आया॥

हे प्रभु! संकट शीघ्र टले,
वापिस मेरा राज्य मिले।
तो मैं छत्र चढ़ाऊँगा,
उत्सव यहाँ कराऊँगा।

ऐसा दर्शन उसे फला,
मुँह माँगा वरदान मिला।
सारा संकट दूर हुआ,
महानंद भरपूर हुआ॥

अपना वचन निभाया है,
उत्सव यहाँ कराया है।
छत्रसाल आया हर साल,
छत्र चढ़ाकर हुआ निहाल॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥17॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महाणिमित्त कुसलाणं जीवित मरणादि ज्ञान प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

संकल्प प्रतिफल

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

विद्यासागर का निश्चय,
दूरदर्शिता का परिचय।
मन्दिर नया बनाने का,
नव मन्दिर में लाने का॥

आसन पर पधराने का,
बाबा तुझे मनाने का।
विद्या गुरु ने काम लिया,
निष्पृह हो निष्काम किया॥

विद्यासागर का तप बल,
दृढ़ संकल्पों का प्रतिफल।
संघ समर्पण का निज बल,
भक्त भावना का संबल॥

साधन कुछ संयंत्र रहे,
सन्त जपों के मंत्र रहे।
चली फूल सी यह प्रतिमा,
विद्यासागर की महिमा॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥18॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण पत्ताणं कामित वस्तु प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्कृत्य प्रभु!

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

अहो हाथ पर हाथ धरे,
बैठे रहते सदा अरे।
कारण इसमें एक अरे,
तुम हो कारक कर्म परे॥

जो कुछ तुमको करना था,
अष्ट कर्म को हरना था।
स्व स्वरूप को पाना था,
सिद्ध दशा प्रकटाना था॥

वह सब कर कृतकृत्य हुए,
अष्ट कर्म हर मुक्त हुए।
स्व स्वरूप प्रकटाया है,
सिद्ध परम पद पाया है॥

अब कुछ करना शेष नहीं,
हुए कार्य सिद्धेश यहीं।
आप हाथ पर हाथ धरें,
हम सब तव पद माथ धरें॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥19॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह णमो विज्जाहराणं उपदेश प्रदेश ज्ञान प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वप्रथम अरिहंत नमन क्यों!

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

सर्व कर्म हर सिद्ध हुए,
फिर क्यों अर्हत् इष्ट हुए।
सिद्ध पूर्व अरिहन्तों को,
बाद नमन क्यों सिद्धों को?

माना सिद्ध गुणाधिक हैं,
पर अर्हत् उपकारक हैं।
सिद्धों के परिचय दाता,
उपकारी अर्हद् ज्ञाता॥

नहीं अज्ञाता मेरी है,
पर कृतज्ञाता मेरी है।
पक्षपात भी नहीं किया,
पहले गुरु को नमन किया॥

उपकारी हितकारी हो,
अविकारी सुखकारी हो।
अतः प्रथम अरिहंत नमन।
करूँ अनन्तर सिद्ध नमन॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥20॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह णमो चारणाणं नष्ट पदार्थ चिन्ता ज्ञान प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बुन्देली के देवता

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

श्रीधर की निर्वाण धरा,
कण-कण में कल्याण भरा।
सिद्ध क्षेत्र यह कहलाता,
सिद्धालय सा सुख दाता॥

सिद्ध क्षेत्र पर जो आये,
सर्व सिद्धियाँ वह पाये।
आदीश्वर का दर्श मिले,
दर्शन पाकर हर्ष मिले॥

भव सागर से तार रहा,
सचमुच पार उतार रहा।
धर्म पोत इसको जानों,
तीर्थ क्षेत्र अपना मानों॥

बुन्देली की शान यहाँ,
संस्कृति सम्मान यहाँ।
जैनों का श्रद्धान यहाँ,
कण-कण में भगवान यहाँ॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥21॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं आयुष्यावसानज्ञान प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन प्यास

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

कब जाऊँ मैं कुण्डलपुर,
पूज्य बड़े बाबा के दर।
बाबा के दर्शन पाऊँ।
निज सम्यग्दर्शन पाऊँ॥

पाऊँ नाथ दरश कैसे?
क्षण-क्षण लगे बरसे जैसे।
दर्शन दर्द मिटाये कब?
वंदन बंध हटाये कब?

आज मुझे सौभाग्य मिला,
चित्त सुमन सा खिला-खिला।
दर्शन पा कुण्डलपुर का,
झूम रहा मन कुण्डल सा॥

ध्यान आपका आता है,
मन मधुवन बन जाता है।
हम सब मिलकर बोलें जय,
पूज्य बड़े बाबा जय-जय॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥22॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अन्तरीक्ष गमन प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म संतुष्टि

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

हम बालक ऐसे तरसे,
ज्यों चातक जल को तरसे।
आज दरश पा हम हरषे,
मानो पुण्य मेघ बरषे॥

भक्ति मार्ग से कहाँ गये?
मेरे मन में समा गये।
जैसे मृदुता माखन में,
जैसे सौरभ सुमनों में॥

जैसे जल में शीतलता,
जैसे फल में मधुरिमता।
ज्यों दर्पण में उज्ज्वलता,
ज्यों मुनिमन में निर्मलता॥

तेरे गुण मेरे गुण में,
अवगुण मेरे सद्गुण में।
समा गये परिवर्तित हो,
नमन करूँ, आवर्तित हो॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥23॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं विद्वेष प्रतिहर्तिंकराय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मिक चौका

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

चार कषायों को रोका,
लगा लिया हमने चौका।
सोलह भावन का सोला,
पहन लिया चिन्मय चोला॥

कितने निर्मल भाव जगा,
सम्यक् शुद्ध स्वभाव जगा।
आत्म द्रव्य से पड़गाहा,
धन्य भाग्य आहा! आहा!!

देव शास्त्र गुरु तीनों ही,
आन पधारे साथ सभी।
ऐसा मौका कहाँ कभी,
यहाँ मिला जो आज अभी॥

हे मेरे जीवन आधार,
स्वीकारो मेरे उपहार।
शुद्ध भावनाओं का सार,
मेरे प्रासुक शुद्ध विचार॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥24॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह णमो दिठ्ठि विसाणं स्थावर जंगम कृत विघ्न विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[तृतीय वलय प्रारम्भ]

मन की दशा

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

कैसा शुभ संयोग अहा,
हर पल शुभ उपयोग रहा।
जब से शुभ संकल्प लिया,
तब से मैं अविकल्प हुआ॥

बाबा तेरा गान किया,
दर्शन वन्दन ध्यान किया।
शुभ भावों का दान दिया,
मंगलमयी विधान किया॥

पूजा यही, विधान यही,
कुण्डलपुर गुणगान यही।
मेरा सम्यग्ज्ञान यही,
सचमुच धर्मध्यान यही॥

जहाँ रचा वह कुण्डलपुर,
जहाँ रहा वह कुण्डलपुर।
जहाँ लिखा वह कुण्डलपुर,
यहाँ-वहाँ सब कुण्डलपुर॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥25॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचः स्तंभन कराय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्मृति वातायन

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ।

कोई कहता साधक हूँ,
कोई कहे उपासक हूँ।
सच पूछो तो बतलाऊँ,
अभी तो मैं कुण्डलपुर हूँ॥

मेरे मन में कुण्डलपुर,
वचनों में है कुण्डलपुर।
शब्द-शब्द में कुण्डलपुर,
भाव-अर्थ में कुण्डलपुर॥

कानों में है कुण्डलपुर,
नयनों में है कुण्डलपुर।
तन-मन मैं है कुण्डलपुर।
जीवन में है कुण्डलपुर॥

धर्म ध्यान में कुण्डलपुर,
आत्मज्ञान में कुण्डलपुर।
कुण्डलपुर जय कुण्डलपुर।
कुण्डलपुर मेरा शिवपुर॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥26॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सेना स्तंभन कराय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भवना

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

सोलह भावन भायी नित,
दर्श विशुद्धि विनय सहित।
निरतिचार व्रत शील पला,
सतत ज्ञान उपयोग भला॥

भव बन्धन से सदा डरें,
यथा शक्ति तप आप करें॥
संयम साधक त्याग करें,
साधु संघ के विघ्न हरें॥

तपो हृदय वैयावृत्ति,
भाव भक्ति अर्हद् भक्ति।
आचार्यों की अर्चायें,
बहुश्रुतों की सेवायें॥

शास्त्र भक्ति में तत्परता,
आवश्यक पालन कर्त्ता।
धर्म प्रभाव किया जग में,
प्रेम भाव धर्मी जन में॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥27॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्नि स्तंभन कराय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ कल्याणक

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

सर्व अर्थ दाता जिनवर,
आदिनाथ आदिम प्रभुवर!
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर,
पुण्य सम्पदायें लेकर॥

आर्य खण्ड का शुभ संस्थल,
नगर अयोध्या सदा कुशल।
अषाढ़ बदी दोजम् के दिन,
मात गर्भ में आये जिन॥

नाथ! गर्भ में आकर के,
परम विशुद्धि लाकर के।
तभी आपने गर्भालय,
बना दिया था जिनआलय॥

मरुदेवी का तन सुंदर,
बना दिया था जिन मंदिर।
गर्भोत्सव कल्याण हुआ,
आदीश्वर जयगान हुआ॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥28॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्ह णमो महातवाणं जल स्तंभन कराय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

नगर अयोध्या धन्य हुआ,
भू मण्डल प्रसन्न हुआ।
चैत्र कृष्ण नवमी के दिन,
जन्में मरुदेवी नन्दन॥

द्वितीयोत्सव प्रथमेश्वर का,
जन्मोत्सव वृषभेश्वर का।
प्रथम इन्द्र ने आकर के,
गिरि सुमेरु ले जाकर के॥

सर्वप्रथम अभिषेक किया,
आदिनाथ शुभ नाम दिया।
नगर अयोध्या फिर आकर,
मरुदेवी पद वन्दन कर॥

मात-तात सम्मान किया,
अपूर्व अद्भुत गान किया।
अनुपम ताण्डव नृत्य किया,
सुर जीवन कृतकृत्य किया॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥29॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं विषरोगादि विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म के दस अतिशय

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

शरद चन्द्र सा रूप अहा,
अतिशय पूर्ण स्वरूप रहा।
दमक रहा तन कुन्दन सा,
सुरभित होता चन्दन सा॥

रजकण स्वेद विहीन सदा,
मल मूत्रादिक हीन सदा।
दुग्ध धार सम रक्त प्रभा,
संस्थान शुभ प्रथम अहा॥

वज्र-वृषभ-नाराच अहा,
सुन्दर संहनन श्रेष्ठ कहा।
एक हजार आठ लक्षण,
सभी विलक्षण शुभलक्षण॥

बल अतुल्य अद्भुत पाये,
वाणी अमृत वरषाये।
हित मित सुखकर बोल अहा,
दस अतिशय अनमोल अहा॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥30॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं दुष्टमृगादि विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या जनक

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

विद्या यश करने वाली,
विद्या निज कल्याणकरी।
सम्यक् आराधित विद्या,
मुक्तिदायिनी सद् विद्या॥

सभी मनोरथ पूर्ण करे,
विद्या गुण सम्पूर्ण भरे।
कामधेनु यह कल्पद्रुम,
विद्या चिन्तामणि अनुपम॥

विद्या आत्महितैषी है,
विद्या हित उपदेशी है।
विद्या धन सर्वोत्तम धन,
विद्या मंगल सर्वप्रथम॥

दोनों बेटी सुकुमारी,
सीख रहीं, विद्या प्यारी।
विद्या आप सिखाते हैं,
विद्या जनक कहाते हैं॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥31॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्ह णमो घोर परक्कमाणं लूतागर्भान्तिका विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य भावना

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

वर्ष वर्द्धनोत्सव आया,
जन्मोत्सव खुशियाँ लाया।
तभी इन्द्र ने आकर के,
सादर शीष झुकाकर के॥

वर्षगाँठ उत्सव कीना,
जग जनता मन हर लीना।
नील अंजना नृत्य करे,
करते-करते मृत्यु वरे॥

अद्‌भुत यहाँ प्रसंग हुआ,
उत्सव भी नहि भंग हुआ।
दूजी नीलांजन आती,
नर्तन करती गुण गाती॥

पर प्रभु तुमने जान लिया,
नश्वर जग पहिचान लिया।
अंतर में जागा वैराग्य,
पाया संयम तप सौभाग्य॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥32॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण वंभचारिणं भूत प्रेतादि भय विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा कल्याणक

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

दीक्षा लेते हुआ भला,
तुमको चौथा ज्ञान मिला।
मानो किसी महल अन्दर,
दीप जले हो अति सुन्दर॥

तन से ममता भाव तजा,
मन में समता भाव भजा।
सावधान हो मौन धरा,
तपोयोग जिससे निखरा॥

छह महिना का अनशन धर,
कायोत्सर्ग धरे मुनिवर।
शान्तभाव से सहज खड़े,
ध्यान सिद्धि के लिए बड़े॥

अहो धैर्य का क्या कहना,
समता से परिषह सहना।
तुमसा साधक कौन कहाँ?
सहस वर्ष तक मौन कहाँ?

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥33॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं मनुष्यामरोपसर्ग विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार दान

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

तेरह महिना अरु नौ दिन,
निराहार मुनिराज प्रथम।
चले हस्तिनापुर आये,
नृप श्रेयांस अति हरषाये॥

नवधा विधि आहार दिया,
दानतीर्थ प्रारम्भ किया।
दान दिया दानेश्वर ने,
लिया दान श्रमणेश्वर ने॥

इक्षुरस का शुद्धाहार,
श्री श्रेयांस दाता सुखकार।
अहोदान, दाता जय-जय,
संस्कार का शुभ अतिशय॥

प्रथमेश्वर का प्रथमाहार,
मोक्षमार्ग का यह आधार।
तब से पावन पर्व चला,
अक्षय तृतीया महाभला॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥34॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं सर्वापमृत्युविनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभ

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

धूलि साल कोटा अन्दर,
चारों दिश अतिशय सुन्दर।
मानस्तंभ निराले हैं,
मान गलाने वाले हैं॥

नील गगन को चूम रहे,
घंटा झालर झूम रहे।
शोभें चमर ध्वजाओं से,
स्वर्ण रजत आभाओं से॥

मानो नान्त चतुष्टय को,
बतलाते हैं त्रय जग को।
जिनमें स्वर्णिम प्रतिमायें,
करें इन्द्रगण अर्चायें॥

करके सबका मान गलन,
करा रहे सम्यक्त्व मिलन।
भक्ति भाव से करूँ नमन,
मानस्तंभ सा उन्नत मन॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥35॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं जन्मान्तर वैर भाव विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिमा भाषा

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

आशा और पिपासा ना,
जग से कुछ अभिलाषा ना।
पहले आशा नाश करें,
फिर क्यों नाशा ध्यान धरें?

ध्यान लीन तेरी प्रतिमा,
बोल रही जिनवर महिमा।
आशा तज अभिलाषा तज,
वीतराग सा निज को भज॥

धर्मध्यान कहलायेगा,
स्वसंवेदन पायेगा।
स्वानुभूति अनुपम तेरी,
काटे भव बंधन फेरी॥

हे ज्ञानी! तू भी तर जा,
हे ध्यानी! तू भीतर जा।
जो नासाग्र विराजेगा,
तो लोकाग्र विराजेगा॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥36॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमो सहि पत्ताणं अपस्मार प्रलापन चिंता विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाभिषेक

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

बता रही क्या जल ढारें?
जीवन में क्या-क्या ढारें?
यह जीवन कैसा ढारें?
वीतराग जैसा ढारें॥

आज प्रभो! तुमको ढारें,
तुम सा जीवन हम ढारें।
दस लक्षण सी यह ढारें,
सिखा रहीं लक्षण धारें॥

क्षमा नम्रता ऋजुता को,
शुचिता सत्य नियमता को।
संयम तप अरु त्याग धरम,
आकिञ्चन्य ब्रह्मचर्य परम॥

जिनने यह लक्षण ढारे,
उन पर इन्द्र कलश ढारें।
अत: आज इनको ढारो,
ढारें कहती गुण ढारो॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥37॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठो सहि पत्ताणं गजमारी विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन प्रातिहार्य

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ।

गन्धकुटी जिन मंदिर में,
उस मन्दिर के अन्दर में।
मध्य भाग में आसन है,
अति सुंदर सिंहासन है॥

चम चम चम चम चमक रहा,
रत्नकांति से दमक रहा।
माणिक मणियों रचित हुआ,
हीरक लड़ियों खचित हुआ॥

मानो स्वयं सुमेरु ही,
तब सिंहासन बनकर ही।
पद सेवा करने आया,
सूर्य बिम्ब भी शरमाया॥

हुई अलंकृत आसन्दी,
पाकर तेरी सन्निधि ही।
अद्भुत अतिशय हे जिनवर,
आप विराजे वहाँ अधर॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥38॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहि पत्ताणं मनोवाञ्छित सिद्धि प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

करें इन्द्रगण परिचर्या,
देव सपर्या शुभ क्रिया।
ज्यों वारिद बरषाते जल,
त्यों वरषायें पुष्प कमल॥

झर झर झर मकरन्द झरे,
चंदन केशर गन्ध अरे।
यत्र तत्र सर्वत्र जहाँ,
फैल रही है गन्ध वहाँ॥

गंगाजल भीगी भीगी,
वरष रही धीमी धीमी।
गन्ध बिन्दु छींटे छींटे,
पुण्य बिन्दु तन मन सींचे॥

फूलों की लग रही झड़ी,
जिन भगवन्! के अग्र पड़ी।
महापुण्य मय सृष्टि भरें,
सुमनावलियाँ वृष्टि करें॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥39॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोवलीणं गोमारी विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अशोक वृक्ष

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ।

प्रभुवर! ढिग सुंदर तरुवर,
रचते जिसे स्वयं सुरवर।
मरकत मणि के हरे-हरे,
पत्ते दिखते भरे-भरे॥

शाखाओं के झूलों पर,
रत्नमयी उन फूलों पर।
कुहुक रहीं हैं कोयलियाँ,
गाती जिन भजनावलियाँ॥

शाखाओं को हिला हिला,
तने डालियाँ झुला-झुला।
हाथ पाँव शिर नाता सा,
नाचे हर्ष मनाता सा॥

पद में पुष्प गिराता सा,
पुष्पांजलि चढ़ाता सा।
मिटा रहा सृष्टि का शोक,
अतः कहाये तरु अशोक॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।40 ।।

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचो वलीणं अजमारी विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्रत्रय प्रातिहार्य

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ।

ऊर्ध्वलोक के इन्द्रों ने,
मध्यलोक मनुजेन्द्रों ने।
अधोलोक नागेन्द्रों ने,
मिलकर के सब वृन्दों ने॥

तुमको माथ झुकाया है,
अपना नाथ बनाया है।
लोकत्रय के स्वामी हैं,
सुखदायक अभिरामी हैं॥

इन्द्रनील की मणियाँ हैं,
रत्नजड़ित किंकड़िया हैं।
दीप्तिमान हो दमक रहीं,
सूर्यचन्द्र सम चमक रहीं॥

सुर सुरेन्द्र ऐसे सुन्दर,
प्रभुवर के मस्तक ऊपर।
धारण करते छत्रात्रय,
पाने तुमसे रत्नत्रय॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥41॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं महिषमारी विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चमर प्रातिहार्य

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

करें यक्षगण सेवायें,
चमर वृन्द ढोले जायें।
मानो सागर बह आये,
क्षीर तरंगें लहराये॥

भक्तिभाव वश होकर के,
चमर बहाना लेकर के।
नभ गंगा नभ से उतरी,
चन्द्र चाँदनी ले बिखरी॥

नभ से हंस उतरते हों,
गुण मोती चुग उड़ते हों।
अथवा प्रभुवर के तन पर,
अमृतमयी झरते निर्झर॥

प्रभु पद में जो आ गिरते,
भव सागर से वह तिरते।
दर्शाते यह दिव्य चमर,
अनुपमेय प्रभुता प्रभुवर॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥42॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं अष्टादश कुष्ट गण्ड मालादि विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दुन्दुभि नाद्

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

सावन भादों से बादल,
गरजे पणव, तुणव, काहल।
बारह कोटि वाद्य बजे,
लगते शंख असंख्य बजे॥

गूँज रहा है नभ मण्डल,
आज विश्व का है मंगल।
ऊँचे स्वर गम्भीर मधुर,
करते जय-जय-जय जिनवर॥

सुर दुन्दुभियाँ नाद करें,
लोक त्रय संवाद भरें।
दिव्यदेशना उत्सव का,
जग कल्याण महोत्सव का॥

आओ, आओ आओ रे,
नाचो गाओ ध्यायो रे।
वीतरागता पाओ रे,
आदिनाथ बन जाओ रे॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥43॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शीतज्वर विनाशक घृतस्त्रावी ऋद्धि प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आभा मण्डल

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

देवेन्द्रों से पूज्य सभा,
गन्धकुटी पावन वसुधा।
परमौदारिक आभा से,
हुई अलंकृत शोभा से॥

आभामण्डल सुन्दर तम,
मंगलकारी दर्पण सम।
त्रय त्रय भूत भविष्यत के,
और श्रेष्ठ भव साम्प्रत के॥

भामण्डल की दीप्ति प्रभा,
जीत रही आदित्य विभा।
दिन रजनी का भेद कहाँ,
कोटि सूर्य उग रहे जहाँ॥

सुर नर देखे अपने भव
मंगलकारी अग्रिम भव।
मन प्रसन्नता भर देता,
चमत्कार सा कर देता॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥44॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं समस्तोपसर्ग विनाशक मधुर स्त्रावि-ऋद्धि प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

दिव्यध्वनि ज्ञानेश्वर की,
श्री सर्वज्ञ जिनेश्वर की।
खिरती सरस हृदयहारी,
विशद अर्थ मंगलकारी॥

महा अठारह भाषा में,
सप्त शतक लघु भाषा में।
जो श्रोता जैसी चाहें,
वैसी भाषा वे पायें॥

जल से लदे हुए बादल,
बरषायें ज्यों उत्तम जल।
जैसे तरुवर में जाता,
वैसा ही रस बन जाता॥

आत्म हितैषी जिनवाणी,
दिव्य देशना कल्याणी।
अनेकान्त रसवन्त बहे,
सदा सदा जयवन्त रहे॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥45॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिइ सवीणं सर्वव्याधि विनाशक अमृत स्त्रावी ऋद्धि प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अतुलनीय

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

उत्तर को मुख किये हुए,
सब प्रश्नोत्तर दिये हुए।
गोमटेश सम आप यहाँ,
अब जायेगा कौन कहाँ?

गोमटेश भी उत्तर मुख,
कुण्डलेश भी उत्तर मुख।
दोनों के मुख उत्तर हैं,
दोनों जगत अनुत्तर हैं॥

वह कायोत्सर्गासन में,
कुण्डलेश पद्मासन में।
वह कर्नाटक देव कहे,
तुम बुन्देली देव रहे॥

गोमटेश में पुत्र खड़े,
कुण्डलपुर में पिता बसे।
मानो वह पौदनपुर है,
तो फिर यहाँ अवधपुर है॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥46॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अक्षीण ऋद्धि प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान फल

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

प्रीति मेरु सम रहे अटल,
पाऊँ सम्यग्दर्शन बल।
ज्ञान सूर्य सा बने विमल,
चारित चन्दा सा उज्ज्वल॥

मुझको आत्म स्वरूप मिले,
जिनमुद्रा जिनरूप मिले।
दिन चर्या हो जिनचर्या,
हो शास्त्रोक्त तपश्चर्या॥

वचन मातृका आँचल में,
पलूँ सदा गुण वत्सल में।
दसलक्षण मम लक्षण हों,
पंच महाव्रत, रक्षण हों॥

भाव शुद्धियाँ सदा बढ़ें,
लोक शिखर पर भक्त चढ़ें।
यह विधान का उत्तम फल,
पाऊँ तेरे चरण-कमल॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥47॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढ माण बुद्धि रिसस्स राज पुरुषादि भय विनाशक कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान-फल

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

भव-भव अर्हत् शरण मिले,
जैनधर्म आचरण मिले।
भव-भव सन्त समागम हो,
भव-भव मुख में आगम हो॥

भव-भव में जिन भक्ति मिले।
रत्नत्रय की शक्ति मिले।
भव-भव में निज विभव मिले,
विभव! विभव पद विभव मिले॥

दु:ख नाश होवें भगवन्!
कर्मनाश होवें भगवन्!
बोधि लाभ पाऊँ भगवन्!
सुगति गमन चाहूँ भगवन्!

निर्ग्रन्थों की छाँव तले,
मुझे समाधि मरण मिले।
यह विधान का उत्तम फल,
पाऊँ तेरे चरण कमल॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥48॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व सिद्धायदणाणं धन धान्य समृद्धि रत्नत्रय प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

[पूर्णार्घ्य]

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

गणाचार्य जी महागुणी,
विरागसागर महामुनी,
उनका शिष्य विभव सागर,
खण्ड काव्य का कोषागार॥

काव्य कला का हुआ उदय,
अतः कहाता कवि हृदय।
शीश शीश से इसे लिखा,
इसमें गुरु आशीष लिखा॥

यह अनर्घ्य संरचना है,
यह अपूर्व संरचना है।
यह अवद्य संरचना है,
यह अक्षय संरचना है॥

दर्शन चिंतनसंस्मृतियाँ
कुण्डलपुर की संस्तुतियाँ,
रचीं काव्य कोषालय में,
जिनवर! सदा जिनालय में॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥49॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवदो महदि महावीर वड्ढमाण बुद्धि रिसीणं समाधि सुख प्रदाय कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[महार्घ्य]

कुण्डलपुर के इस आँगन में, भक्तिभाव से गाता हूँ।
पूज्य बड़े बाबा जी तेरे, चरण कमल शिर नाता हूँ॥

आदिनाथ जन्मोत्सव पर,
दर्शन पाये कुण्डलपुर।
यह विधान आरम्भ किया,
श्रुत निधान प्रारम्भ किया॥

दीवाली के दीप जले,
पूर्ण हुआ यह भले-भले।
कुण्डलपुर आधार रहा,
लक्ष्य आत्म उद्धार रहा॥

वृक्ष नहीं तुम फल देखो,
कूप नहीं तुम जल देखो।
मेरे भाव प्रबल देखो,
जीवन स्वयं सफल देखो॥

अक्षर अर्घ्य समर्पण हैं,
कुण्डलपुर को अर्पण हैं।
बाबा तेरे भक्त यहाँ,
रखें सुरक्षित जहाँ-तहाँ॥

पूज्य बड़े बाबा का दर्शन, बड़े पुण्य से पाता हूँ।
कुण्डलपुर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ॥50॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं अहं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय सर्वोपद्रव शान्ति कराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः।

जयमाला

कुण्डलपुर के दर्शकर, मैं हूँ आज निहाल।
भक्ति भाव पूजा रची, अब गाऊँ जयमाल॥
श्री सिद्धक्षेत्र यह कुण्डलपुर! शुभ तीर्थक्षेत्र यह कुण्डलपुर।
जिन धर्मक्षेत्र यह कुण्डलपुर, सत्कर्मक्षेत्र यह कुण्डलपुर॥
आँखों का तारा कुण्डलपुर, प्राणों से प्यारा कुण्डलपुर।
जय श्रीधर स्वामी कुण्डलपुर, जय आदिनाथजी कुण्डलपुर॥1॥

जय जय मनहारी कुण्डलपुर, जय अतिशयकारी कुण्डलपुर।
जय बाबा तेरा कुण्डलपुर, जय बाबा मेरा कुण्डलपुर॥
जय सुन्दर सरवर कुण्डलपुर, जय समवशरण शुभ कुण्डलपुर।
जय पूजित वंदित कुण्डलपुर, जय महिमा मण्डित कुण्डलपुर॥2॥

कुण्डलपुर का कण-कण स्वतंत्र, चेतन स्वतंत्रता सम्बोधक।
यह वीतराग आकर्षण है, पर अखिल विश्व का सम्मोहक॥
निज सत्ता में भगवत्ता है, परिचायक बाबा की प्रतिमा।
बाबा का दर्शन पाते ही, अब जाग उठी अन्तर प्रतिभा॥3॥

सम्मेद शिखर सा तीर्थ प्रखर, मधुवन सा यहाँ नजारा है।
चंपा पावा गिरनार अवध, अष्टापद से भी प्यारा है॥
कुण्डलपुर में जो-जो आया, पूजा में कुण्डल सा झूमा।
तब लगा दर्शकों को ऐसा, ज्यों लोक शिखर उसने चूमा॥4॥

नूतन मंदिर का क्या कहना, जो अम्बर तल को चूम रहा।
श्री जिनशासन जयवंत रहे, यह नारा जिसमें गूंज रहा॥
यह दिगम्बरों का पूज्य तीर्थ, यह जिनशासन पहचान बने।
यह अखिल विश्व में सर्व प्रथम, जिन मंदिर भव्य महान बने॥5॥

यह कलाकृति अनुपम अतुल्य, इस भूतल पर वरदान बने।
जय पूज्य बड़े बाबा भगवन्! छोटे बाबा भगवान बनें॥
वे हैं अमूर्त शिल्पी जग में, पर मूर्त शिल्प यह खड़ा किया।
जिनने बाबा का यह मंदिर, अब छोटे से यह बड़ा किया॥6॥

जिनधर्म धरोहर कला तीर्थ, जिन संस्कृति निर्माता है।
इस कला कृति के चित्रण में, विद्या सागर की गाथा है॥
हर पत्थर-पत्थर बोल रहा, क्यों चेतन इतना बह है।
जो चमत्कार को पूछ रहा, उस पर छाया कुछ कुहरा है॥7॥

धर्मोदय कारक कुण्डलपुर, यह ही कर्मोदय नाशक है।
पुण्योदय कारक कुण्डलपुर, यह ही पापोदय नाशक है॥
वात्सल्य प्रेम के बीजाणु, इस धरा धाम पर बिखरे हैं।
विद्यासागर सम सन्तों के, चारित्र यहाँ पर निखरे हैं॥8॥

छह घड़ी यहाँ पर आ जाओ, छह घरिया कहती घड़ी घड़ी।
जिसने छह घरिया आज चढ़ी, उसकी किस्मत है बहुत बड़ी।
छह घरिया के मंदिर प्यारे, ऊँचे ऊँचे अति न्यारे हैं।
नत मस्तक सर्व दिशा इसको, इसको नमते ध्रुव तारे हैं॥9॥

श्रीधर स्वामी निर्वाण धरा, इसमें कण-कण कल्याण भरा।
यह परम विशुद्धि का पहरा, वृक्षावलियों से हरा-भरा॥
जब-जब बाबा तेरे दर पर, छोटे बाबा जी आते हैं।
तब पर्व दशहरा दीवाली, सब एक साथ आ जाते हैं॥10॥

हर बार विलक्षण सा लगता, हर रोज लगे दशलक्षण सा।
बहिनों को रक्षाबन्धन सा, भैया को यह पर्युषण सा॥
हर महानुभाव को आमंत्रण, आता है उच्च ध्वजाओं से।
हर आगन्तुक का स्वागत है, सरवर जल वृक्ष लताओं से॥11॥

श्री शान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर, श्री महावीरकीर्ति मुनिवर।
श्री विमलसिन्धु सन्मति सागर, श्री विराग सागर जी गुरुवर॥
गुरु संघ साथ कुण्डलपुर आ, दर्शन वंदन कर मुदित हुये।
विद्यासागर का क्या कहना, जो कुण्डलपुर से विदित हुये॥12॥

उत्सव की नहीं प्रतीक्षा कर, हर पल ही मंगल उत्सव है।
पूजा प्रक्षाल करो जिस क्षण, उस क्षण ही महा महोत्सव है।
तुम तीर्थ वंदना को आओ, वंदनकर बँधन हरना है।
निज 'विभव' स्वयं में पाकर के, भवसागर पार उतरना है॥13॥

दोहा – जन्म कुण्डली में लिखा, कुण्डलपुर का योग,
पूजन करके आपकी, मिले शुद्ध उपयोग॥13॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्रस्थ विराजित आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – लगन लगी प्रभु आप में, आज लगन का योग।
जिनपूजा कर पा लिया, सिद्धिप्रिया संयोग॥2॥

॥ इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

आरती

पूज्य बड़े बाबा के द्वारे, दीप जलाकर के।
कुण्डलपुर की करूँ आरती, कुण्डलपुर आके॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पल, जो इन्द्रों द्वारा।
दीप आरती गयी उतारी, बहा भक्ति धारा॥
बाबा तेरे भक्तगणों को, यहाँ बुला करके।
कुण्डलपुर की करूँ आरती, कुण्डलपुर आके॥1॥
पूज्य बड़े बाबा.................................॥

केवलज्ञानी की यह आरती, केवलज्ञान वरे।
मोह तिमिर को दूर भगाये, सम्यग्ज्ञान करे॥
विश्व प्रेम के दीप जलाऊँ, बैर भुलाकर के।
कुण्डलपुर की करूँ आरती, कुण्डलपुर आके॥12॥
पूज्य बड़े बाबा.................................॥

धुआँ न बाती तेल बिना ही, दीपक सदा जले।
ऐसा केवलज्ञान दीप वह, मुझमें शीघ्र जले॥
अपने भक्तों को खुश रखना, हिला मिला करके।
कुण्डलपुर की करूँ आरती, कुण्डलपुर आके॥3॥
पूज्य बड़े बाबा.................................॥